ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

उपन्यासकार प्रेमचंद - गोदान

Dr. Arun Lata Verma

Associate Professor, Hindi, MMH College, Ghaziabad, U.P, India

सार

गोदान, प्रेमचन्द का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। कुछ लोग इसे उनकी सर्वोत्तम कृति भी मानते हैं। इसका प्रकाशन १९३६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई द्वारा किया गया था। इसमें भारतीय ग्राम समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण है। गोदान ग्राम्य जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य माना जाता है। इसमें प्रगतिवाद, गांधीवाद और मार्क्सवाद (साम्यवाद) का पूर्ण परिप्रेक्ष्य में चित्रण हुआ है।गोदान हिंदी उपन्यास के विकास का उज्वलतम प्रकाशस्तंभ है। गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया के परिवार के रूप में हम भारत की एक विशेष संस्कृति को सजीव और साकार पाते हैं, ऐसी संस्कृति जो अब समाप्त हो रही है या हो जाने को है, फिर भी जिसमें भारत की मिट्टी की सोंधी सुबास भरी है। प्रेमचंद ने इसे अमर बना दिया है।

परिचय

गोदान प्रेमचंद का हिंदी उपन्यास है जिसमें उनकी कला अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची है। गोदान में भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा, उसकी धर्मभीरुता और भारतपरायणता के साथ स्वार्थपरता ओर बैठकबाजी, उसकी बेबसी और निरीहता- का जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है। उसकी गर्दन जिस पैर के नीचे दबी है उसे सहलाता, क्लेश और वेदना को झुठलाता, 'मरजाद' की झूठी भावना पर गर्व करता, ऋणग्रस्तता के अभिशाप में पिसता, तिल तिल शूलों भरे पथ पर आगे बढ़ता, भारतीय समाज का मेरुदंड यह किसान कितना शिथिल और जर्जर हो चुका है, यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। नगरों के कोलाहलमय चकाचौंध ने गाँवों की विभूति को कैसे ढँक लिया है, जमींदार, मिल मालिक, पत्रसंपादक, अध्यापक, पेशेवर वकील और डाक्टर, राजनीतिक नेता और राजकर्मचारी जोंक बने कैसे गाँव के इस निरीह किसान का शोषण कर रहे हैं और कैसे गाँव के ही महाजन और पुरोहित उनकी सहायता कर रहे हैं, गोदान में ये सभी तत्व नखदर्पण के समान प्रत्यक्ष हो गए हैं। गोदान वास्तव में २०वीं शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दियों के भारत का ऐसा सजीव चित्र है, जैसा हमें अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।[1]

गोदान में बहुत सी बातें कही गई हैं। जान पड़ता है प्रेमचंद ने अपने संपूर्ण जीवन के व्यंग और विनोद, कसक और वेदना, विद्रोह और वैराग्य, अनुभव और आदर्श् सभी को इसी एक उपन्यास में भर देना चाहा है। कुछ आलोचकों को इसी कारण उसमें अस्तव्यस्तता मिलती है। उसका कथानक शिथिल, अनियंत्रित और स्थान-स्थान पर अति नाटकीय जान पड़ता है। ऊपर से देखने पर है भी ऐसा ही है, परंतु सूक्ष्म रूप से देखने पर गोदान में लेखक का अद्भुत उपन्यास-कौशल दिखाई पड़ेगा क्योंकि उन्होंने जितनी बातें कहीं हैं वे सभी समुचित उत्थान में कहीं गई हैं। प्रेमचंद ने एक स्थान पर लिखा है - 'उपन्यास में आपकी कलम में जितनी शक्ति हो अपना जोर दिखाइए, राजनीति पर तर्क कीजिए, किसी महफिल के वर्णन में १०-२० पृष्ठ लिख डालिए (भाषा सरस होनी चाहिए), कोई दूषण नहीं।' प्रेमचंद ने गोदान में अपनी कलम का पूरा जोर दिखाया है। सभी बातें कहने के लिये उपयुक्त प्रसंगकल्पना, समुचित तर्कजाल और सही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रवाहशील, चुस्त और दुरुस्त भाषा और वणर्नशैली में उपस्थित कर देना प्रेमचंद का अपना विशेष कौशल है और इस दृष्टि से उनकी तुलना में शायद ही किसी उपन्यास लेखक को रखा जा सकता है।[2,3]

जिस समय प्रेमचन्द का जन्म हुआ वह युग सामाजिक-धार्मिक रुढ़िवाद से भरा हुआ था। इस रुढ़िवाद से स्वयं प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए। जब अपने कथा-साहित्य का सफर शुरु किया अनेकों प्रकार के रुढ़िवाद से ग्रस्त समाज को यथाशक्ति कला के शस्त्र द्वारा

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

मुक्त कराने का संकल्प लिया। अपनी कहानी के बालक के माध्यम से यह घोषणा करते हुए कहा कि "मैं निरर्थक रूढ़ियों और व्यर्थ के बन्धनों का दास नहीं हूँ।"

प्रेमचन्द और शोषण का बहुत पुराना रिश्ता माना जा सकता है। क्योंकि बचपन से ही शोषण के शिकार रहे प्रेमचन्द इससे अच्छी तरह वाकिफ हो गए थे। समाज में सदा वर्गवाद व्याप्त रहा है। समाज में रहने वाले हर व्यक्ति को किसी न किसी वर्ग से जुड़ना ही होगा।

प्रेमचन्द ने वर्गवाद के खिलाफ लिखने के लिए ही सरकारी पद से त्यागपत्र दे दिया। वह इससे सम्बन्धित बातों को उन्मुख होकर लिखना चाहते थे। उनके मुताबिक वर्तमान युग न तो धर्म का है और न ही मोक्ष का। अर्थ ही इसका प्राण बनता जा रहा है। आवश्यकता के अनुसार अर्थोपार्जन सबके लिए अनिवार्य होता जा रहा है। इसके बिना जिन्दा रहना सर्वथा असंभव है।

वह कहते हैं कि समाज में जिन्दा रहने में जितनी कठिनाइयों का सामना लोग करेंगे उतना ही वहाँ गुनाह होगा। अगर समाज में लोग खुशहाल होंगे तो समाज में अच्छाई ज्यादा होगी और समाज में गुनाह नहीं के बराबर होगा। प्रेमचन्द ने शोषितवर्ग के लोगों को उठाने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने आवाज लगाई "ए लोगों जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिन्दों की तरह रहो, मुर्दों की तरह जिन्दा रहने से क्या फायदा।"

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में शोषक-समाज के विभिन्न वर्गों की करतूतों व हथकण्डों का पर्दाफाश किया है।[4,5]

विचार-विमर्श

उपन्यास वे ही उच्च कोटि के समझे जाते हैं जिनमें आदर्श तथा यथार्थ का पूर्ण सामंजस्य हो। 'गोदान' में समान्तर रूप से चलने वाली दोनो कथाएं हैं - एक ग्राम्य कथा और दूसरी नागरी कथा, लेकिन इन दोनो कथाओं में परस्पर सम्बद्धता तथा सन्तुलन पाया जाता है। ये दोनो कथाएं इस महाकाव्य की दुर्बलता नहीं वरन, सशक्त विशेषता है।

यदि हमें तत्कालीन समय के भारत वर्ष को समझना है तो हमें निश्चित रूप से गोदान को पढना चाहिए इसमें देश-काल की परिस्थितियों का सटीक वर्णन किया गया है। कथा नायक होरी की वेदना पाठको के मन में गहरी संवेदना भर देती है। संयुक्त परिवार के विघटन की पीड़ा होरी को तोड़ देती है परन्तु गोदान की इच्छा उसे जीवित रखती है और वह यह इच्छा मन में लिए ही वह इस दुनिया से कूच कर जाता है।

गोदान औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसान का महाजनी व्यवस्था में चलने वाले निरंतर शोषण तथा उससे उत्पन्न संत्रास की कथा है। गोदान का नायक होरी एक किसान है जो किसान वर्ग के प्रतिनिधि के तौर पर मौजूद है। 'आजीवन दुर्धर्ष संघर्ष के बावजूद उसकी एक गाय की आकांक्षा पूर्ण नहीं हो पाती'। गोदान भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी है।[6,7]

'गोदान' होरी की कहानी है, उस होरी की जो जीवन भर मेहनत करता है, अनेक कष्ट सहता है, केवल इसलिए कि उसकी मर्यादा की रक्षा हो सके और इसीलिए वह दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास भी करता है, किंतु उसे इसका फल नहीं मिलता और अंत में मजबूर होना पड़ता है, फिर भी अपनी मर्यादा नहीं बचा पाता। परिणामतः वह जप-तप के अपने जीवन को ही होम कर देता है। यह होरी की कहानी नहीं, उस काल के हर भारतीय किसान की आत्मकथा है। और इसके साथ जुड़ी है शहर की प्रासंगिक कहानी। 'गोदान' में उन्होंने ग्राम और शहर की दो कथाओं का इतना यथार्थ रूप और संतुलित मिश्रण प्रस्तुत किया है। दोनों की कथाओं का संगठन इतनी कुशलता से हुआ है कि उसमें प्रवाह आद्योपांत बना रहता है। प्रेमचंद की कलम की यही विशेषता है।

इस रचना में प्रेमचन्द का गांधीवाद से मोहभंग साफ-साफ दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द के पूर्व के उपन्यासों में जहॉ आदर्शवाद दिखाई पड़ता है, गोदान में आकर यथार्थवाद नग्न रूप में परिलक्षित होता है। कई समालोचकों ने इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा भी दिया है।[8,9]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

		गोबर+ झुनिया
1	होरीराम+धनिया	सोना+मथुरा
		रुपा+रामसेवक
2	शोभा	
3	हीरा+पुनिया	

परिणाम

प्रेमचंद कथा और उपन्यास के सम्राट थे। प्रेमचंद का समय वही है जो कविता के क्षेत्र में छायावाद का था। एक और छायावादी कवी कविता के माध्यम से विचारों में क्रांति भर रहे थे तो दूसरी और कथा साहित्य में प्रेमचंद सक्रिय थे। प्रेमचंद स्वाधीनता संग्राम में अपने लेखन के माध्यम से योगदान दे रहे थे , उन्होंने भारत की भोली-भाली जनता जिसका पूंजीवादी निरंतर किसी न किसी प्रकार से शोषण कर रहा था , उसको उजागर किया है। प्रेमचंद ने उपन्यास में भी संपूर्ण समाज का चित्रण किया है। उनकी कहानियां निरंतर किसी न किसी उद्देश्य और किसी न किसी घटना पर आधारित हुआ करती थी , जिसमें एक सूक्ष्म भाव छिपा रहता था। उनकी कहानियां प्राया यथार्थवाद पर आधारित रहती थी साथ ही उसमें आदर्शवाद और ब्राह्मणवादी शैली का भी प्रभाव परिलक्षित होता था।[10,11]

स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी के आग्रह पर उन्होंने जमी जमाई सरकारी नौकरी को भी को छोड़कर महात्मा गांधी का साथ दिया। किंतु अंततोगत्वा उनकी भावनाएं आहत हुई उन्हें समझ आ गया कि संपूर्ण समाज में पूंजीवाद का वर्चस्व है। अतः वह मार्क्सवाद से भी प्रभावित हुए किंतु उनके कहानी और उपन्यास में आदर्शवाद और यथार्थवाद कि कोई कमी नहीं हुई।

आचार्य नंददुलारे वाजपेई और डॉक्टर नगेंद्र ने आदर्शवादी वहां प्रेमचंद ने स्वयं अपने आपको आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहा है

साहित्य यथार्थ और आदर्शवाद का समन्वय है नग्न यथार्थ पुलिस की रिपोर्ट भर है तो यथार्थवाद आदर्श प्लेटफार्म का फतवा। .....प्रेमचंद

साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा जीवन की आलोचना है। .....प्रेमचंद

नीति और साहित्यशास्त्र का लक्ष्य एक है केवल उपदेश देने की विधि में अंतर है।

यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देता है , उसके कारण मानव चरित्र पर से हमेशा विश्वास उठ जाता है। यथार्थवाद हमारी दुर्बलता हमारी विषमताओं और हमारी कर्मो का नग्न चित्र होता है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

समाजवादी आलोचकों ने उनके उपन्यास को जन – जीवन के यथार्थ चित्र समाज के सर्वहारा वर्ग किसान मजदूर और नारी के शोषण और उत्पीड़न का सहानुभूतिपूर्ण वर्णन और शोषकों तथा उत्पीड़ितों के प्रति कहीं व्यक्त और कहीं परीक्षण घृणा भाव देख उन्हें आदर्शवादी उपन्यासकार कहा है। और अपने राजनीतिक मतवाद के कारण उन्हें वह श्रेय प्रदान किया है , जिससे वह कदाचित पूर्ण अधिकारी भी नहीं है।

रूसी आलोचक ब्रेस क्रोनी किसी पूर्वाग्रह के कारण प्रेमचंद को प्राप्त सम्मान तथा भारत में मिली साहित्यिक प्रतिष्ठा को पर्याप्त नामांकन लिखते हैं

" इस भारतीय लेखक को बहुत दिनों तक उसकी प्राप्ति नहीं मिलेगी जो कि उसे अपनी महान साहित्य परंपरा के लिए मिलना चाहिए" [12]

पूंजीवादी व्यवस्था शोषण पर आधारित है उनका काम है साधनहीन और बेबस लोगों को लूटना और अपना वर्चस्व दिखाना। गोदान का भी विषय इसी पर आधारित है। शोषक के वर्ग हैं, गांव के – जमींदार , राय साहब , अमरपाल सिंह , महाजन , दातादीन , पुलिस का दरोगा , पटवारी झिंगुरी सिंह यह सब होरी तथा अन्य गांव वालों का शोषण करते हैं।

थाना पुलिस और न्याय व्यवस्था भी पूंजीवादी व्यवस्था के साथ है रामसेवक थाना पुलिस कचहरी अदालत के व्यवस्था को उजागर करता है। राय साहब अपनी महानता दिखाने के लिए गांव में रामलीला और पूजा पाठ करते हैं , किंतु चंदा उन असहाय निर्धनों से वसूलते हैं जिनके पास पहले ही दुखों का अम्बार है। ब्राह्मण उन्हें धर्म का भय दिखाकर उनका शोषण करते हैं। प्रेमचंद ने भारतीय किसान की उस व्यवस्था को उजागर किया है , जिसके अंतर्गत भारतीय किसान कर्ज में जन्म लेता है और जीवनभर कर्ज के बोझ से दबा रहता है और कर्ज में ही मर जाता है। इतना ही नहीं वह अपनी संतान पर भी कर्ज का बोझ लाद देता है।

गोदान का मुख्य पात्र होरी दिन-रात करके कमाता है ताकि वह एक गाय अपने द्वार पर बन सके लोग उसे ठाकुर कह सके इस लालसा को पूरा करने के लिए होरी जिस प्रकार प्रयत्न करता है ठीक उसी प्रकार शोषित वर्ग उसका शोषण करते हैं। उसका भाई गाय को जहर खिलाकर मार देता है इतने ही क्रम में प्रेमचंद ने महाजनी , पुलिस , न्यायालय , पंच सभी का यथार्थ उजागर कर दिया है।

गोदान में अनैतिक यौन संबंध गोबर – झुनिया , मातादीन सिलिया , नौखरी – खन्ना – मालती , मीनाक्षी तथा उसका वेश्यागामी पति इन सब के द्वारा लेखक बताता है कि समाज में यह प्रवृत्ति किस प्रकार बढ़ रही है। यहां प्रेमचंद की दृष्टि पूर्णता यथार्थवादी है।

प्रेमचंद ने गोदान में संयुक्त परिवारों के विघटन का भी दृश्य उकेरा है।होरी का परिवार उसके भाइयों से अलग हो जाने के कारण ही घटित होता दिखाया है। इतना ही नहीं गोबर झुनिया से विवाह करके शहर की ओर पलायन कर जाता है। यहां भी होरी के परिवार का विघटन होता है। गोदान के पात्र यथार्थ जीवन से लिए गए हैं उनके नाम , उनकी वेशभूषा , उनके कार्य , उनके हावभाव , उनका रहन-सहन सभी यथार्थ है।[11,12]

निष्कर्ष

प्रेमचंद को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद ही कहने का कारण यह भी है कि जहां उनका जीवन चित्रण यथार्थ अवलोकन और समाज निरीक्षण पर आधारित है , वहां उनके पात्र समस्याओं के समाधान आदि आदर्शवादी हैं। कुछ लोगों का यह मत है कि जीवन में यथार्थ और आदर्श दोनों होते हैं और उपन्यास जीवन का चित्र होता है। अतः उपन्यास भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद भी हो सकता है , ठीक नहीं क्योंकि यथार्थवाद या आदर्शवाद का संबंध जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं लेखक की मानसिक प्रवृत्ति से है , उसकी जीवन दृष्टि से है , और प्रेमचंद के संस्कार पारिवारिक परिस्थितियां युग प्रभाव सब ने उनके जीवन दृष्टि को आदर्शवादी बनाने में योगदान दिया। गोदान में मेहता भी आत्मा की और चिंगारी में विश्वास करते हैं जो समय आने पर आलोकित हो उठती है। ईश्वरीय न्याय पर भी उनकी आस्था थी। गांधी युग के तीनों चरणों का पूरा इतिहास उनके उपन्यासों में मिलता है। गांधी से प्रभावित होकर

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

ही उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिया था , अपने को गांधीवादी मानते हुए भी उन्हें गांधी के सिद्धांत में विश्वास था। आर्य समाज के सुधारको से भी वह प्रभावित थे , उनका साहित्य दृष्टिकोण भी आदर्शवादी था। 1936 ईस्वी तक आते-आते गांधीवादी विचारधारा , सुधारवादी दृष्टि हृदय परिवर्तन के सिद्धांत से प्रेमचंद का मोहभंग हो चुका था। उन्होंने अपने जीवन के कटु अनुभव तथा मार्क्सवादी विचारधारा ने उनके मन में पक्का विश्वास जमा लिया था कि मानव समाज के कष्टों और यात्राओं का एकमात्र कारण पूंजी है। अर्थ वैमनस्य है और इसके लिए उत्तरदाई है समाज व्यवस्था , पूंजीवादी समाज व्यवस्था। अतः गोदान में उन्होंने इसी पूंजीवादी व्यवस्था का नकाब उलटकर उसके नग्न विभक्त कुरूप यथार्थ का पर्दाफाश किया है , उस पर कड़ा प्रहार किया है।

मालती का तितली से मधुमक्खी बनना , युवती से समाजसेविका बनकर गांव में स्त्रियों तथा बच्चों की रात दिन भर जागकर सेवा – सुश्रुषा करना प्रेमचंद के आदर्शवादी मनोवृति का ही परिणाम है। मेहता के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा कर मालती का उनकी जीवनसंगिनी बनकर शेष जीवन बिताने का संकल्प उतना ही आदर्शवादी है जितना प्रसाद जी के नाटक स्कंदगुप्त में देवसेना का। स्कंदगुप्त के प्रस्ताव को अस्वीकार करना उसका यह उदास प्रेम लेखक की आदर्शवादी दृष्टि का ही परिचायक है।[12]

समग्रतः – कह सकते हैं कि प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य यात्रा यथार्थवादी और आदर्शवाद पर आधारित था। प्रेमचंद मध्यमवर्गीय समाज से थे अतः उन्हें मध्यमवर्ग अथवा उसे नीचे के जात अथवा समाज से उन्हें जुड़ाव था। प्रेमचंद का सभी साहित्य स्वाधीनता संग्राम के उद्देश्यों की पूर्ति करता था। गांधी जी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर गांधी जी का साथ दिया। अंततोगत्वा उन्होंने महसूस किया कि यह समाज में पूंजीवादी का प्रभाव है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में अंतर केवल और केवल पूंजी के आधार पर करता है उनका मोह भंग हुआ। प्रेमचंद ने अपने साहित्य यात्रा में अग्रणी की भूमिका निभाई 1936 के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने साहित्य की रूपरेखा बताई थी उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन के लिए नहीं अपितु समाज के लिए होने की बात कही थी।[12]

संदर्भ

1. Chatterjee, Saibal (15 August 2004). "Gulzar's vision of timeless classics". The Tribune. अभिगमन तिथि 25 August 2021.
2. ↑ "गोदान उपन्यास की रचना का रहस्य". जागरण. मूल से 27 मार्च 2015 को पुरालेखित.
3. रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 17. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
4. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 18. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
5. ↑ रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 15
6. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 19. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
7. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५६.
8. ↑ "Munshi Premchand: गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना हिंदी साहित्य में एक महान उपलब्धि". Dainik Jagran.
9. ↑ बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.
10. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 20. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
11. ↑ यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।

12. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 21. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.